तीर्थकर और भगवान

Presentation Created by:
श्रीमति सारिका छाबड़ा
भगवान
बीतरागी
सर्वज्ञ
भ + ग + वान

भ = सुख/आनन्द (याने वीतरागता)

ग = ज्ञान

वान = वाले
वीतरागी

वीत + रागी

वीत अर्थात् बीत जाना, नष्ट हो जाना

राग अर्थात् किसी को भला जानकर चाहना

सर्वज्ञ

सर्व + ज्ञ

सर्व अर्थात् संपूर्ण, सब कुछ

ज्ञ अर्थात् जानना
भगवान कौन हैं?

अरहंत और सिद्ध परमेश्वर भगवान ही हैं।
तीर्थकर

जो धर्मतीर्थ (मुक्ति का मार्ग) का उपदेश देते हैं

समवशिर्ण आदि विभूति से युक्त होते हैं

जिनको तीर्थकर नामकर्म नाम का महापुण्य का उद्य नोता है
तीर्थ = जिससे तिरा जाय / जो तिरे, दुःखों से तिराये

जो स्वयं दुःखों से तिरे हैं

तीर्थकर दुःखों से तिरा कर धर्म/सुख में धरते हैं
तीर्थकर तो भगवान होते ही हैं

पर साथ ही जो तीर्थकर न हों पर वीतरागी और पूर्णज्ञानी हों,

वे अरहंत और सिद्ध भी भगवान हैं।
भगवान जन्मते नहीं, बनते हैं

gृगुण और शक्ति की अपेक्षा तीर्थकरों में कोई अंतर नहीं है
तीर्थकर चौबीस होते हैं
24 तीर्थकरों के नाम का छंद
ऋषभ1 अजित2 सम्भव3 अभिनन्दन4,
सुमति5 पद्म6 सुपार्श्व7 जिनराय।
चन्द्र8 पुहुप9 शीतल10 श्रेयान्स11 जिन,
वासुपूज्य12 पूजित सुरराय॥
विमल13 अनन्त14 धर्म15 जस उखल,
शान्ति16 कुन्थु17 अर18 मल्ल19 मनाय।
मुनिसुब्रत20 नमि21 नेमि22 पार्श्व23 प्रभु,
वर्ध्मान24 पद पुष्प चढ़ाय॥
<table>
<thead>
<tr>
<th>नाम</th>
<th>चिह्न</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१ ऋषभदेव (आदिनाथ)</td>
<td>वृषभ</td>
</tr>
<tr>
<td>२ अजितनाथ</td>
<td>हाथी</td>
</tr>
<tr>
<td>३ संभवनाथ</td>
<td>घोड़ा</td>
</tr>
<tr>
<td>४ अभिनन्दन</td>
<td>बंदर</td>
</tr>
<tr>
<td>५ सुमतिनाथ</td>
<td>चकवा</td>
</tr>
<tr>
<td>६ पद्मप्रभ</td>
<td>कमल</td>
</tr>
<tr>
<td>७ सुपार्श्वनाथ</td>
<td>साथिया</td>
</tr>
<tr>
<td>८ चन्द्रप्रभ</td>
<td>चंद्र</td>
</tr>
<tr>
<td>९ पुष्पदन्त (सुविधिनाथ)</td>
<td>मगर</td>
</tr>
<tr>
<td>१० शीतलनाथ</td>
<td>कल्पवृक्ष</td>
</tr>
<tr>
<td>११ श्रेयांसनाथ</td>
<td>गेंडा</td>
</tr>
<tr>
<td>१२ वासुपूज्य</td>
<td>भैसा</td>
</tr>
<tr>
<td>१३ विमलनाथ</td>
<td>शूकर</td>
</tr>
<tr>
<td>१४ अनंतनाथ</td>
<td>सेही</td>
</tr>
<tr>
<td>१५ धर्मनाथ</td>
<td>वज्र</td>
</tr>
<tr>
<td>१६ शान्तिनाथ</td>
<td>हिरण</td>
</tr>
<tr>
<td>१७ कुन्युनाथ</td>
<td>बकरा</td>
</tr>
<tr>
<td>१८ अरनाथ</td>
<td>मीन</td>
</tr>
<tr>
<td>१९ महनिय नाथ</td>
<td>कलसा</td>
</tr>
<tr>
<td>२० मुनिसुवत</td>
<td>कछुआ</td>
</tr>
<tr>
<td>२१ नमनिय नाथ</td>
<td>लालकमल</td>
</tr>
<tr>
<td>२२ नेमनिय नाथ</td>
<td>शंख</td>
</tr>
<tr>
<td>२३ पार्श्वनाथ</td>
<td>सर्प</td>
</tr>
<tr>
<td>२४ महावीर (वर्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति)</td>
<td>सिंह</td>
</tr>
</tbody>
</table>
पंचबालयति

वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर भगवान ये 5 ही बाल ब्रह्मचारी थे इसीलिये इन्हें पंचबालयति भी कहते हैं
तीर्थकर और भगवान में समानता

dोनों ही मोह-राग-द्वेष आदि सभी विकारी भावों से रहित हैं

dोनों ही अनन्त दर्शन-ज्ञानमय, अनन्त वीर्यसम्पन्न, सहज स्वाभाविक अतीतिय आनन्द से परिपूर्ण हैं

अर्थात् अनन्त चतुष्ठय से युक्त हैं
<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>तीर्थकर</th>
<th>भगवान (तीर्थकर बिना)</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>एक काल में ये २४ ही होते हैं</td>
<td>ये अनेक होते हैं</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>ये सभी भगवान तो होते ही हैं</td>
<td>सभी भगवान तीर्थकर नहीं होते हैं</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>कुछ अरहंत परमेश्वर ही तीर्थकर होते हैं</td>
<td>ये अरहंत और सिद्ध परमेश्वर दोनों हो सकते हैं</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>ये शरीर सहित ही होते हैं</td>
<td>ये शरीर रहित और सहित दोनों होते हैं</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>इनके सिर्फ ४ घाति कर्मों का ही नाश होता है</td>
<td>ये ४ घाति कर्म और ८ कर्म से रहित होते हैं</td>
</tr>
<tr>
<td>तीर्थकर</td>
<td>भगवान (तीर्थकर बिना)</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>---------</td>
<td>---------------------</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>इनका उपदेश होता है, दिव्यध्वनि खिरती है, समवशरण की रचना होती है</td>
<td>सभी का उपदेश नहीं होता है</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>इनके कल्याणक मनाये जाते हैं</td>
<td>इनके कल्याणक नहीं मनाये जाते हैं</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>इनका शासन चलता है</td>
<td>इनका शासन नहीं चलता है</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>इनके जिनबिंबों पर चिन्ह होते हैं</td>
<td>अन्य भगवानों के जिनबिंबों पर चिन्ह नहीं होते हैं</td>
</tr>
</tbody>
</table>
इनके जानने से क्या लाभ है?

आदर्श कौन है इसका ज्ञान होता है

सच्चे सुख के मार्ग का ज्ञान होता है

शुद्धात्मा का स्वरूप प्राप्त होता है

इनके उपदेश से रत्नत्रय की प्राप्ति होती है